मालवीय प्रकाश

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान की हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष -3 | अंक - 7 | जयपुर | सितंबर - दिसम्बर 2017 | पृष्ठ संख्या - 1

निदेशक की कलम से...

डॉ. उदय कुमार आर. यारागट्टी

निदेशक- मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर

हिन्दी पत्रिका 'मालवीय प्रकाश' के सांतवें संस्करण में आप सभी का अभिनंदन। इस अंक के माध्यम से मैं आपसे सिर्फ यह कहना चाहूँगा कि हम अपने भाग्य के निर्माता स्वयं होते हैं। वर्तमान के सुख दुःख पर उतार चढ़ाव पर हमारा कोई वश नहीं चलता है, पर यदि संस्कार बीजों के रहस्य का हमें आभास हो तो हम अपने प्रारब्ध और भाग्य जनित विवशता से बाहर आ सकते हैं और अपने भाग्य का निर्माण स्वयं कर सकते हैं।

हमें यह मालूम होना चाहिये कि हमारा प्रत्येक कर्म, विचार, भाव एक संस्कार को जन्म देता है, ये संस्कार ही हमारे भाग्य व भविष्य के, सुख-दुःख के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, हमारे चित्र (मन में) सभी अच्छे बुरे संस्कारों का जखीरा है जो समय आने पर सुनिश्चित परिणाम देते हैं।

जीवन में जहाँ भी सुख है, खुशियाँ है वह सिर्फ और सिर्फ शुभ विचारों, पुण्य कर्मों और श्रेष्ठ भावों से निर्मित संस्कार बीजों का ही सुफल है यानि कि अगर चित्त (मन) की पोटली में शुभ कर्मों, शुभ विचार, अच्छी वृत्तियों के संस्कार बीज होंगे तो जीवन में सदैव खुशियों की फसल लहलहायेगी।

वर्तमान में हम जैसा जियेंगे, वैसा ही संस्कार बीज बनेगा जो भविष्य को फलित करेगा, तो क्यों न हम वर्तमान के पल को संकल्प पूर्वक शुभ संस्कार बीज उत्पन्न करने वाले कर्मों से भर दें। विचारों में सकारात्मक हों, भावनाओं में पवित्रता लायें विचार सरल रखें और बदले में अलौकिक सुख और आंनद के उत्तराधिकारी बनें। - जय हिंन्द।

आचार्य (डॉ.) उदय कुमार आर. यारागट्टी

अध्यात्म पथ के पथिक

सुदूर गाँव के बाहर एक कुटिया थी। कुटिया के बाहर एक बड़ा सा पीपल का पेड़ था। पेड़ के चारों ओर मिट्टी का चबूतरा बना हुआ था। इसकी छाँह तले शिवलिंग स्थापित था। यह सब चारों ओर से प्राकृतिक ढंग से बेड़े से घिरा हुआ था। पास में एक छोटी - सी नदी बहती थी, जिसकी कल-कल की आवाज इस प्राकृतिक आश्रम को सौंदर्य से अभिमंडित कर देती थी। पास में झुरमुटनुमा एक जंगल था। यहाँ पर लोग कम आते थे और यहाँ पर केवल एक गुरु एवं एक शिष्य रहते थे। शिष्य गुरु की सेवा में निगम्न रहते थे। गुरू अपनी कुटिया के आसन पर प्राय: समाधिस्थ रहते थे।

आज गुरु अमृतासन अपनी समाधि से बाहर निकले थे। उनका चेहरा दिव्यता से दमक रहा था। आँखों में अनोखी एवं अद्‌भुत चमक थी। चेहरे के आस-पास उनकी दिव्यता के आभामंडल को शिष्य अन्वित सघनता से अनुभव कर पाते थे, क्योंकि वे गुरुकृपा से अन्वित साधना के उच्च आयामों में प्रतिष्ठित हो चुके थे, पर उनका बालसुलभ व्यवहार उनकी सिद्धि की विशेषताओं को आच्छादित किए रहता था। या यों कहें कि गुरु अपने शिष्य को सामान्य जीवन जीने के लिए कह रहे थे, ताकि उनकी अंतर्यात्रा में कोई विघ्न-बाधा न आ सके। अन्वित की चेतनात्मक स्थिति अत्यंत उन्नत थी। इसी बीच स्वामी अमृतासन ने कहा- वत्स आज तुम्हारा मित्र आशीष आने वाला है, कोई सूचना के बिना।

अन्वित ने कहा- हाँ, गुरुदेव! उसके आगमन हेतु उचित व्यवस्था करता हूँ। इतना कहने के बाद वे आशीष के भोजन आदि की व्यवस्था करने में जुट गए। अन्वित पाक-कला में निपुण एवं पारंगत थे और यह भी उन्हें गुरुकृपा से प्राप्त थी। जब अन्वित एवं आशीष यहाँ अध्ययन करते थे तो स्वामी जी उनको अपने हाथों से स्वादिष्ट, पौष्टिक एवं सात्त्विक भोजन कराते थे। वे स्वयं व्रत उपवास करते थे, परंतु दोनों को अच्छे से भोजन कराते थे। अध्ययन के उपरांत आशीष की इच्छा संसार की ओर लौटने की थी। वे लौटे और संसार का धन, मान, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा अर्जित की। यह सब उन्होंने अपनी ईमानदारी और समझदारी से किया था। क्योंकि उनके अंदर उनके गुरु के आरोपित संस्कार प्रचुर मात्रा में थे, परंतु इस सबके बावजूद वे एक चीज को भूल न सके।

आशीष अपने मित्र अन्वित के प्रति ईर्ष्या करते थे और उनको लगता था कि वे सभी क्षेत्र में उनसे बेहतर हैं। अन्वित के शांत एवं सरल स्वभाव को वे मूर्खता एवं नादानी समझते थे। वे समझते थे कि इन्हीं कारणों से वे गुरु के पास ठहर गए और संसार में गति न कर सके। उनकी इस बात से गुरु एवं शिष्य, दोनों परिचित थे। आज आशीष गुरु के आश्रम आए थे। अन्वित ने उनको भोजन कराया। भोजन के स्वाद से उन्हें उनका बचपन याद आ गया। वे भावविभोर हो उठे, परंतु अहंकार की रेखा उनके अंदर फिर से जाग उठी और उन्होंने कहा- ''अन्वित! मेरे भाई! तुमने यहाँ रहकर अपने जीवन को व्यर्थ कर दिया। तुमने यहाँ रहकर गुरु की सेवा की यह तो अच्छी बात है, परंतु तुमने अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए क्या किया? कौन सी उपलब्धि प्राप्त कर ली यहाँ रहकर? मुझे देखो, आज मेरे पास सब कुछ है। आशीष की इन बातों से अहंकार की गंध आ रही थी और उस सात्त्विक वातावरण को प्रदूषित कर रही थी। उसने आगे कहा- देख! मैं अपनी मेहनत, लगन और ईमानदारी से समाज में प्रतिष्ठित हूँ। लोग मेरा सम्मान करते हैं। इस शहर एवं देश के बेहद धनाढ्य एवं प्रतिष्ठित लोगों में मेरा नाम है। देश -विदेशों में लोग मुझे जानते हैं। परन्तु यह कार्य तुमसे नहीं हो पता। इसके लिए प्रखर बुद्धि, मेधा एवं समझ चाहिए।

आशीष की बातों में अहंकार टपक रहा था, परन्तु इस सबको सुनकर भी अन्वित का चेहरा शांत था एवं संतोष से परिपूर्ण था। वे बस, मुस्करा रहे थे। दरअसल अंहकार स्वयं को प्रतिष्ठित करता है और अपने सामने किसी को मानता नहीं है। आशीष को भान नहीं था कि वहाँ उनके गुरु महाराज भी बैठकर उसे सुन रहे हैं। आशीष ने उन्हें देखा तो उसे ग्लानि हुई।

स्वामी अमृतासन ने कहा- वत्स आशीष! तुमने जो प्राप्त किया, वह अवश्य ही सराहनीय है। निस्संदेह सांसारिक रूप से तुम एक सफल एवं कुशल व्यक्तित्व के धनी हो, पर तुम संसार के हो एवं संसार के रह गए हो। इससे परे एक और भी संसार है, जो संसार को जीतकर पाया जाता है। तुम संसार के हो और इसे तुम जीत नहीं सके, इसलिए तुम्हारी पहुँच उस अनोखे संसार जिसे अध्यात्म का संसार कहा जाता है, तक नहीं है और जान ही नहीं सके कि तुम्हारे मित्र की पहुँच कहाँ तक है, और उसकी प्रतिष्ठा कितनी है, इसे देखने के लिए मैं तुम्हें दृष्टि प्रदान करता हूँ।

इतना कहकर स्वामी जी ने आशीष के माथे को सहलाया। आशीष को एक झटका-सा लगा और वह लान्वित की चेतनात्मक स्थिति को देखने लगा। उसने देखा कि अन्वित ने गुरुकृपा एवं अपने चरम पुरुषार्थ से अपनी वृत्तियों काम, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष, ईर्ष्या, राग को किस प्रकार जीत लिया है। वह अपनी वृत्तियों को नियंत्रित कर उच्चस्तरीय कार्यों में नियोजित करने में सफल हो चुका है। अब उसे वैयक्तिक अवरोध से नहीं समष्टि के अवरोध से दो चार होना पड़ रहा है। और वह वहाँ भी गुरुकृपा से सफल रहा है। यह सब देखने के बाद आशीष को स्वयं की प्रतिष्ठा चुभने लगी। उसने गुरु महाराज को साष्टांग दंडवत् करके अनुनय किया- हे गुरुदेव! मुझे भी इस यात्रा में शामिल कर लें। अब मैं अपने और अन्वित के बीच के यथार्थ अंतर को समझ पा रहा हूँ। मैं संसार को त्याग दूँगा, मुझे भी अध्यात्म के पथ के पथिक रूप में स्वीकार कर लें। गुरु स्वामी अमृतासन ने कहा- वत्स इस जन्म में यह तुम्हारे लिए सुगम नहीं है। हाँ इस जन्म की तैयारी से अगले जन्म में अध्यात्म में तुम्हारी गति होगी। आशीष को अन्वित की चेतना की अपूर्व यात्रा के रहस्य की समझ हो गई थी। वह भी इसी की तैयारी में जुट गया।

- संकलन दिव्यजोत जोशी

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय एक विलक्षण व्यक्तित्व

''भारत की एकता का मुख्य आधार हैं इसकी संस्कृति जिसका उत्साह कभी नहीं टूटा। यही इसकी विशेषता है।''

मदन मोहन मालवीय

''समाज में एकता स्थापित करना यह स्वतन्त्रता का पहला सोपान है। हिन्दू मुसलमानों को ऐसा निश्चय करना चाहिये कि कैसा भी प्रसंग आवे, हम आपस में धर्म अथवा मत के लिए कभी संघर्ष नहीं करेंगे।''

''मेरा अपने धर्म पर दृढ़ विश्वास है परन्तु पर धर्म का अपमान करने की कल्पना मेरे मन को छू तक नहीं गई। किसी गिरजाघर अथवा मस्जिद के पास से जब मैं जाता हूँ तब मेरा मस्तक अपने आप झुक जाता है। जब परमेश्वर एक ही है तो लड़ने का कारण क्या? भूमि एक, देश एक, वायु एक, ऐसी परिस्थिति रहते हुए भी आपस में दंगों का होना, इससे बढ़कर और आश्चर्य की बात क्या हो सकती है।''

मुल्तान के हिन्दू मुस्लिम दंगे से दुःखी होकर पण्डित मदन मोहन मालवीय ने कहा था, ''हिन्दू, सिक्ख, पारसी, ईसाई तथा मुसलमान उसी परमात्मा के बन्दे हैं। जब मैं किसी मस्जिद के सामने से गुजरता हूँ तो हिन्दू धर्मानुयायी होने पर श्री श्रद्धा से अपना सिर झुकाता हूँ। इसी प्रकार में गिरजाघर का भी मान करता हूँ।''

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आर्य समाज का जलसा हो रहा था। उसमें एक सज्जन ने इस्लाम और ईसाई धर्म पर जो मन में आया कहा। जब पण्डित मदन

एक अनमोल शख्सियत

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय

मोहन मालवीय को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने प्रबन्धकों से कहलवा भेजा कि हिन्दू विश्वविद्यालय में उनके व्याख्यान नहीं होने चाहिए जिनकी वाणी संयत नहीं हो और जो दूसरे धर्मों और धर्म प्रवक्ताओं की निन्दा करे। इसी प्रकार सन् 1935 में कुछ विद्यार्थियों ने मुस्लिम त्यौहारों की छुट्टी की माँग की। पण्डित मदन मोहन मालवीय ने कार्यकारिणी समिति में कट्टर हिन्दुओं के विरोध के बावजूद भी उक्त अवकाश स्वीकृत कराया।

मालवीय जी की सर्वधर्मप्रियता का एक अनतरंग दृष्टान्त मौलाना शाहिद फाखरी के शब्दों में - ''एक बार वह कांग्रेस की एक सार्वजनिक सभा में भाषण देने के लिए बस्ती जा रहे थे।

शेष पृष्ठ 2 पर...

सम्पादकीय...

प्रिय पाठकों,

जब भी कभी ''मालवीय प्रकाश'' के संपादन में देरी होती है तो कई साहित्य के रसिक उलाहना देते कि क्या इसका प्रकाशन बंद कर दिया है महोदया, कोई फेसबुक, कोई मेल तो कोई यूं ही चलते फिरते शब्दों के कटाक्ष की बौछार कर जाते हैं, पर यकीन मानिये यह मुझ में सदैव रोमांच व जल्दी ही अगले संस्करण को पूरा करने का जोश भरता रहा। रचना की धरती एवं अभिव्यक्ति का अंतरिक्ष सदैव रचनात्मकता का शक्तिपुंज रहा है उन लेखकों के लिये, जो शब्दों में भावों के रंग और उनकी बुनावट की थिरकनों को पाठकों के मन में मचलने व उनके हृदयों में धड़कने को बेताब रहते हैं, ''मालवीय प्रकाश'' के ज़रिये।

पाठक व लेखक के बीच एक गुनगुनाता सा रिश्ता हुआ करता है। लेखक के शब्द पाठक के ज़हन पर असर करें, उससे पहले खामोश शब्दों की झनकार उसके दिल में ध्वनित होने लगती है। लेखकों की सृजनात्मकता की असंख्य आकाश गंगाये, पाठकों की सोच को हर तरफ से प्रभावित व प्रकाशित करती है। उनके जीवन में बदलाव लाती है जो अंततः चंचल मन की रश्मियों की तरह एक लंबा सफर तय करते हुये पूरे समाज में बदलाव की धूप लेकर आती है।

मैं, ''मालवीय प्रकाश'' के इस अंक को उन सभी लेखकों को समर्पित करना चाहूँगी जिन्होंने छुये, अनछुये विषयों पर सृजन की बहुरंगी अभिव्यक्तियों से अपनी सहज रचनात्मकता से, अपने अथक परिश्रम के ज़रिये पत्रिका को इस स्तर पर लाने के मेरे इस सपने को साकार किया है एवं पाठकों के मन एवं हृदयों पर सुंदर विचारों का रंगोत्सव मनाने में अपना योगदान दिया है।

इस अंक में अभिव्यक्ति के कुछ नये रंगों के साथ,

सस्नेह,

आदर सहित

भवदीया,

डॉ. ज्योति जोशी,

सम्पादक एवं सह-आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर

9413971604, 9549654852, 0141-2713350, jojo_jaipur@yahoo.com

malaviyaprakash.lokmat@gmail.com | jjoshi.chy@mnit.ac.in

इस अंक में ...

विवरण	पृष्ठ संख्या
निदेशक की कलम से	1
लेख - मदन मोहन मालवीया	1
अध्याय पथ के पथिक	1
सम्पादकीय	1
उजला मन	2
कहानी - बर्फ का गोला	2
दिमाग की कार्य क्षमता	2
कशिश	2
सम्मान	2
अवसर की पहचान	2
उत्कृष्ट कार्य	3
क्रोध एवं अहंकार	3
मजदूर	3
कविता	3
मेरा मन	3
जिज्ञासा	4
योग भगाये रोग	4
लेख मदन मोहन मालवीया	4
जीवन मूल्य	4
उत्तम स्वभाव	4

उजाला मन

(कहानी)

आज मैं आपका परिचय एक ऐसे नारी पात्र से कराना चाहूँगी जो भले ही औरत होने की तकलीफ और उसके अधम माने जाने की वास्तविकता को संवेदित न करता हो, या विशेषकर किसी क्रांतिकारी चेतना अथवा प्रगतिशील स्वर का संवाहक न हो, किंतु जानने लायक चरित्र जरूर है, यह जानने लायक होना भी क्या अपने में मायने नहीं रखता है अगर इस जानने लायक का आधार निरा दिलचस्प होने के अलावा कुछ और हो? यह कुछ और चूंकि नाना प्रकार के व्याख्यायित हो सकता है, इसलिए इस पचड़े में ज्यादा घुसे या फंसे बगैर उस नारी पात्र पर अब सीधे आया जाता है।

उस नारी पात्र का असली नाम यों आनंदी देवी था, लेकिन अपने अड़ोस पड़ोस से ज्यादातर वह अम्मा या दादी कहकर जानी जाती थी, उसके आंगन के एक कच्चे भाग में गेंदे के पौधे बराबर उगे रहते थे, इसलिए पहचान साफ करने की जरूरत समझी जाने पर अम्मा या दादी से पहले गेंदेवाली और जोड़ दिया जाता था इसके अलावा भी उसका एक और नाम था उन्नीस सौ बीस यह नाम लोगों के बीच ठिठोली या मसखरी का चाट-पत्ता चटखारते हुए लिया जाता था, आप मानेंगे कि कोई भी बात बिना जड़ के नहीं होती है, इस बात की भी जड़ थी, आंनदी से जब कोई उसकी आयु पूछता तो उसका उत्तर होता था, उन्नीस सौ बीस पूछने वाला समझ न पाने पर अपने सवाल को उलट-पलट कर साफ करता था, मैं जानना चाहता हूँ कि आपकी उम्र क्या है, मतलब कि कितने साल की हैं आप? जवाब फिर वहीं होता था, उन्नीस सौ बीस तब दिमाग के चक्के पर सुई कुछ देर अटकने के बाद सही लीक पर आ जाती थी और पूछने वाला समझ जाता था कि जनम वर्ष बताया गया है।

आनंदी को पहले अपना जन्म वर्ष भी पता नहीं था, उसे सिर्फ इतना पता था कि उसका विवाह बारह साल की उम्र में हुआ था और दो बेटे हुए थे, बच्चों में से बिरजू अर्थात् ब्रजमोहन ने जो सोलह दरजे तक पढ़ा है और मुल्क का निज़ाम चलाने वाले एक दफ्तर में अफसर है, पक्का हिसाब लगाकर बताया था कि अम्मा तुम्हारा जन्म सन् उन्नीस सौ बीस में हुआ होगा, थोड़ा आगे-पीछे खिसकने से खास फर्क नहीं पड़ता है कोई पूछे तो बस उन्नीस सौ बीस बता देना।

सन् उन्नीस सौ पच्चानवें में, जिसमें हम और आप एक-दूसरे से रू-ब-रू हैं, सन् उन्नीस सौ बीस आकर पचहत्तर साल पुराना हो चुका है, आनंदी की काया पर, बल्कि यों कहा जाए कि उसके पूरे व्यक्तित्व में इस आयु की स्पष्ट छाप थी, उसके बाल सफेद हो गए थे जैसा कि होना चाहिए था, दांत घीस गए थे व त्वचा में झुर्रियों का मकड़जाल फैल चला था, वह आंखों पर सुबह से जो स्टील फ्रेम का चश्मा चढ़ाती थी तो रात को सोते वक्त ही उतारती थी।

मगर जहाँ तक आनंदी के अंदर की ऊर्ज का सवाल है, उसने उसे बुढ़ापे के कीड़े से चोट जाने से बहुत- कुछ बचा रखा था वह उस वृक्ष की तरह थी, पुराना हो जाने पर भी जिसमें हरितिमा बनी रहती है और थोड़े बहुत फल आ जाते हैं ऐसे वृक्ष की जड़े जमीन को कुछ ज्यादा मजबूती से पकड़े होती है, आनंदी अपनी जीवन चर्या से जुड़े सारे काम स्वयं कर लेती थी, नल से मतलब लायक पानी निकाल लेती थी, नल से मतलब लायक पानी निकाल लेती थी, पास के बाजार से जरूरत का सामान टुकड़ों-टुकड़ों में ले आती थी।

सुबह की पकाई सब्जी या दाल भले ही वह शाम को भी चला ले, लेकिन रोटी दोनों वक्त ताजा सेंकती थी, उसकी सेंकी हुई रोटियों में सुनहरी चित्तियां अब भी पड़ती थीं और वे फूलती भी थीं, दो चार बार की कोशिश के बाद वह सुई को धागा पहनाने में सफल हो जाती थी और फिर कपड़ों की उधड गई सीवन को सही कर लेती थी, यही नहीं, वह आस पड़ोस के घरा में कामों में भी हाथ बंटा लेती थी, बहुत सी नई औरतों का डाला हुआ आचार ज्यादा दिन टि नहीं पाता था, वह उनका आचार तेल मसाले की सही मिकदार के साथ्ज्ञ डाल देती थी, वह अपने पास एक शीशी में पुराना घी हमेशा बनाए रखती थी, और किसी का सीना जकड़ जाने पर उसे मल देती थी।

आनंदी के बार में यहाँ एक जानकारी यह भी देना चाहूंगी कि एक सुबह वह उठकर अपने पति के लिए वही संबोधन करने लगी थी जो बाहर वाले करते थे, बड़े बाबू, धोती कुर्ता मैंने धो कर रख दिया है, धोबी लगता अपना बीमार पड़ गया है, धुलाई अब उसकी बढ़ा देना, बड़े बाबू चीजें महंगी बराबर होती जा रही है, वैसे पहले वह पति से बिरजू के बाबू के मुखड़े से मुखातिब होती थी, वह उस छापेखाने में नौकर थे जहाँ सरकार गजट छपते थे जब उनकी मृत्यु हो गई थी तब भी वह उसी संबोधन के साथ रोई थी, बड़े बाबू, रात मैंने दूध दिया था, तुमने कुछ बताया नहीं था, ऐसा तो नहीं करते थे, बड़े बाबू, पहले मुझे ऊपर जाना था, तुम क्यों चले गए? आनंदी ने फिर जल्द ही बड़े बाबू के बगैर रहना सीख लिया था शुरू का भय, खींच आया दुश्चिंताओं का जाला टूट गया था, जिंदगी अपने नए रूप में भी बेस्वाद नहीं है अगर उस स्वाद से अपने को सही ढंग से जोड़ लिया जाए।

बड़े बाबू प्यार में मुझे लाड़ो कहते थे, शुरू-शुरू में जब मैं मायके जाती थी तो बड़े बाबू हफ्ते भर के अंदर बुलाने पहँचु जाते थे भौजाइयाँ मेरी हंसती थी मैं इनसे कहती थी, इतनी बेशर्मी ठीक नहीं, यह जवाब देते थे कि भरी बिरादरी के बीच तुमको बाजे-गाजे के साथ ब्याह कर लाया हूँ अब तुम पर मेरा पूरा हक है।

बड़े बाबू तुमसे कभी गुस्सा भी करते होंगे? पूछने वाली सवाल करती। बड़े बाबू शतरंज के शौकीन थे, छुटटी के दिन वह जो अपने दोस्त वाजपेयी मास्टर के यहाँ जाते थे तो बच्चों, बाजार सबकी सुध बिसार देते थे, मेरे कहने-सुनने पर कभी-कभी अनाप-शनाप बोलने लगते थे, उस दिन वे बाजी हारे जो होते थे, दो एक बार हाथ भी चला दिया था, मगर औरत - मर्द की लड़ाई दूध की मलाई दूध का असलपन मलाई से ही मालूम होता है।

अम्मा तुम बताती थी कि तुम्हारे मायके में गोश्त खाया जाता था, तुम्हारी जबान पर भी चढ़ा हुआ था, बड़े बाबू गोश्त नहीं खाते थे तो तुमने भी छोड़ दिया था, बड़े बाबू के न रहने पर अम्मा अब तो तुम खा सकती हो? उनकी पसंदगी, नापसंदगी का ख्याल पहले रखती थी, अब भी रखूंगी उनके उठ जाने से क्या मैं बड़े बाबू की बीवी नहीं रही हूं।

पूछने वाली औरत के चेहरे पर पूछते हुए जिस तरह का रस लेने वाला भाव होता था, आनंदी के चेहरे पर भी बताते हुए उसी तरह का होता था, वह जैसे धूप के टुकड़े के एकदम नीचे न खड़ी होकर उससे कुछ फासले पर खड़ी होती थी, चुनचुने ताप के बजाय गुनगुनी ऊष्मा का सुख लेती हुई।

शेष पृष्ठ संख्या 3 पर....

बर्फ का गोला

(कहानी)

वो बर्फ के गोले वाला हर रविवार को अपना ठेला उस उपेक्षित बस्ती में लगता था जहाँ पर निम्न आय वर्ग वाले लोग या मेहनत मजदूरी कर गुजर बसर करने वाले लोग रहते थे, रोज की दिनचर्या में तो वो हमारे विद्यालय के सामने ही ठेला लगता था और उसके शरबत में पता नहीं क्या खासियत थी कि सारे बच्चे बर्फ के गोले को खाने के लिए लघु अवकाश (लंच) कि प्रतीक्षा करते थे, एक बार बर्फ के गोले से सारा शरबत पीने के बाद बच्चे अक्सर दूसरी बार बचे हुए खाली बर्फ पर फिर से थोड़ा शरबत लेने का आगह करते थे ओर वो मुस्करा कर एक अजीब सी प्रसन्नता लिये थोड़ा और शरबत डाल दिया करता था।

रविवार को वो मुफ्त में ठेले से बर्फ के गोले दिया करता था सुबह से शाम तक ओर वो भी उस कच्ची बस्ती (उपेक्षित बस्ती) में जहाँ से कुछ भी बिक्री नहीं होती थी, ये बात मुझे भी अक्सर सोचने पर मजबूर कर देती थी कि वो ऐसा क्यों किया करता है, मेरा एक मित्र था राकेश वो उसी बस्ती के पास ही रहता था। एक दिन मैंने उससे जिज्ञासा वश पूछ ही लिया कि

राकेश आखिर ये क्या राज है क्या ये बर्फ के गोले वाले गोपालजी रविवार को कच्ची बस्ती में दिन भर मुक्त में बर्फ के गोले खिलाते हैं

उसने कहा ''हाँ भाई सुना तो मैंने भी है, इस रविवार को चल कर देख ही लेते हैं''

मैंने हामी भर ली और अगले रविवार को हम दोनों उस कच्ची बस्ती में जा पहुँचे।

वहाँ एक बड़े से मैदान के पास एक पुराने बरगद के नीचे एक चबूतरा बना हुआ था, कुछ बच्चे वहाँ बैठ कर बर्फ के गोले के शरबत कि चुस्किओं का आनंद ले रहे थे एवमं अन्य बच्चे एक श्रृंखलाबद्ध खड़े अपनी बारी कि प्रतीक्षा कर रहे थे वो भी अनुशासन के साथ।

इसी बीच दो तीन कुछ बड़ी उम्र के नवयुवक वहाँ से गुजर रहे थे वो भी उस बर्फ के गोले वाले को देख कर रूक गये और उसके सामने खड़े हो कर कहने लगे कि पहले वो दो तीन बर्फ के गोले उन्हें दे देवें।

बर्फ के गोले वाले ने मना कर दिया और कहने लगा कि ''आज ये केवल इन बच्चों के लिए ही हैं।''

लेकिन वो कहाँ सुनने वाले थे, उनके स्वर में तेजी ओर बात करने के अंदाज में लापरवाही थी वो उस ठेले वाले से उलझ पड़े इतने में सामने से एक संभ्रांत व्यक्ति आये उन्होंने सफेद धोती कुर्ता पहिन रखा था, समय की नाजुकता को भांपते हुए उन्होंने बड़ी सौम्यता से कहा गोपाल जी पहले इन बड़े बच्चों को दे दीजिये।

अरे पैसे दे तो रहे हैं हम और ये गोले वाला हम पर कोई अहसान नहीं कर रहा।

लेकिन ये व्यवस्था गोपालजी आज मेरे कहने से कर रहे है और ये आज आये भी हैं खास इन्हीं बच्चों के लिये जो पूरे सात दिनों से इसकी प्रतीक्षा में रहे हैं।

वे तीनों ये सुन कर बिना खाए पिये ही वहाँ से चलते बने हम थोड़ी देर तक खड़े खड़े तमाशा देखते रहे, जब सब बच्चे खा कर चल दिए तो उन व्यक्ति ने गोपालजी का हिसाब किया ओर चले गये।

उनके जाने के बाद गोपालजी हमें देख कर बोले अरे! बच्चों आप यहाँ कैसे? आप भी बर्फ का गोला लेने के लिए आये क्या ? उसने मुस्करा कर हम से पूछा।

बस हम तो यहीं देख ने आये कि आप यहाँ रविवार को कैसे इन बच्चों के लिए यहाँ आते हो? फिर गोपाल जी ने हमें पूरा वृतान्त सुनाया।

ये दीनानाथ जी है, इनको भी बचपन में आप ही की तरफ बर्फ के गोले खाना अच्छा लगता था। एक दिन इन्होंने सोचा कि इन गरीब बच्चों को तो ये नसीब नहीं होता होगा तो क्यों ना हर रविवार को इनके लिए ये (स्वयं) बर्फ के गोले खाने का इंतजाम कर दिया करें, इन्होंने मुझको इस काम के लिए अनुबंधित कर लिया, मुझ को भी इनके इस पुण्य काम में भलाई नजर आयी ओर जब मैंने भी इन मासूम बच्चों के लिए रविवार जैसे आराम के दिन भी ठेला लगाने के लिए अपनी स्वीकृति दे डाली, अब जब भी मैं इन के चेहरे पर बर्फ के गोले खाने की खुशी देखता हूँ तो मुझ को बहुत ही अच्छा लगता है।

इस बात को लगभग चालीस वर्ष बीत गये हैं किन्तु आज भी मैं जब किसी समाज सेवक से मिलता हूँ तो मुझ को दीनानाथ जी की स्मृति आ जाती है धन्य है उनके ऐसे पुनीत संस्कार जो औरों की प्रसन्नता मैं अपने स्वयं को जोड़ कर देखते हैं और उनको भी समानांतर बचपन को खुशियाँ का अहसास दिलाते के लिए प्रयासरत रहते हैं। - अंशु सक्सैना

दिमाग की कार्य क्षमता

दिन की तुलना में रात को जगने वालो का चलता है तेज दिमाग-

सर्वे के मुताबिक पाया गया कि जो विद्यार्थी बचपन से दिन के बजाय रात में पढ़ाई करते थे, उनका प्राप्तांक प्रतिशत दिन में पढ़ने वालों की तुलना में अधिक रहा।

कुछ अध्ययनों में कहा गया है कि रात में काम करने या जगे रहने से लीवर को नुकसान होता है तथा श्वेत रक्त कणिकाएं मृत होने लगती है, लेकिन दिमाग के मामले में ऐसा नहीं है, क्योंकि उपरोक्त समस्याऐं तब होती है जब हम काम का अतिरिक्त बोझ अपने सिर पर ले लेते हैं। जैसे रात में फैक्टरी में काम करने वाले मजूदर मोबाइल कम्पनियों में नाइट शिफ्ट में कम्प्यूटर पर कार्यरत कर्मचारी, वाहन चालक इत्यादि।

यह एक ऐसा वर्ग है जिसको मजबूरीवश ये काम करने पड़ते हैं और यही मजबूरी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। परंतु यदि दिमाग पर अतिरिक्त बोझ न लेकर रात में कोई इंसान जगता है, कुछ काम करता है या पढ़ाई करता है तो ८० प्रतिशत आंकड़ों के अनुसार उसके कार्यों का परिणाम दिन के कार्यों की तुलना में अधिक प्राप्त होगा।

ऐसा इसलिए होता हे क्योंकि रात में अतिरिक्त शोरगुल ना होने से हमारी अपने कार्य के प्रति एकाग्रता अधिक हो जाती है, साथ ही हमारी सारी इन्द्रियाँ सिर्फ एक ही दिशा में कार्य के प्रति सजग हो जाती है।

इस प्रकार हम दिन की तुलना में रात में किए गए कार्यों को लम्बे समय तक याद रखने लगते हैं जो दिमाग को निरन्तर सक्रिया करता चला जाता है।

सावधानी - १. दिमाग को उतना ही काम में ले जितना वो सहजता से कार्य कर रहा है। अन्यथा हार्मोन्स का खतरा बढ़ने लगता है।

२. नींद की पूर्ति अवश्य करें। इसके लिए दिन में आराम किया जा सकता है। - नेमी चन्द

अवसर की पहचान

एक व्यक्ति ने कहीं पढ़ रखा था कि गंगा के किनारे पड़े पत्थरों में एक पत्थर पारस का भी है, जिसे छूते ही हर वस्तु स्वर्ण में बदल जाती है। इसी आस में कि वह पत्थर उसे मिल जाए, वह नित्य गंगा किनारे घूमता, सारे पत्थरों को उलट पलट कर देखता और पारस पत्थर न मिलने पर उसे वापस गंगा नदी में फेंक देता। वर्षों यही क्रम चलता रहा और उसे पारस नहीं मिला, पर उसे पत्थर उठाकर, घुमा फिराकर गंगा जी में फेंकने की आदत सी जरूर हो गई।

एक दिन उसने एक पत्थर उठाया और इससे पहले कि वह समझ पाता कि वही पारस पत्थर है, उसने आदतवश उसे पानी में फेंक दिया। उस पत्थर ने उसके हाथ में पड़े रेत के कणों को छुआ था, वे सभी सोने के हो गए थे, पर पत्थर उसके हाथ से निकल गया था। वर्षों की प्रतीक्षा के बदले कुछ सोने के कण ही उसके हाथ में रह गए। मनुष्य भी ऐसे ही अवसर गँवाता रहता है और यह भूल जाता है कि भगवान ने उसे जीवन का प्रत्येक क्षण एक स्वर्गीय अवसर की तरह दिया है, पर हर क्षण गँवाते-गँवाते ऐसी आदत पड़ जाती है कि ये पता ही नहीं चल पाता कि कौनसा अवसर जीवन में सौभाग्य ला सकता था। अवसर पहचानने वाले ही जीवन में सफल हो पाते हैं।

कशिश

श्रवण को कर्ण सुमधुर, देखन को पावन नयना
जिह्वा सरस सलिला सुमुखी, मनवा तन का गहना।।
तन पवित्र रखियो ना रखियो, मन में ना रखियो मैल
सब जीव का स्वाद है साधो, नित-नित भावे खेल।
गोता खावे भवसागर में, पथिक ना पावे पार
जो मनुज पड़े मोह में तन के कैसे हो नौकापार
राम नाम ले मुख में राही, मन में राखे गाँठ।
ऐसे लोगन की जग में, लगी हुई है पाँथ।।
प्रेम बंध से चले है जीवन, साँकर गली ही भाय।
बिन प्रेम अर विश्वास के कोनी पुढतो खाय।
राजनीति की रोटियों में, रक्त धुल रहा समनीर।
साम्प्रदायिकता की अग्नि में, सुलग रहा कश्मीर।
चीनी-चीनी बाजार का हुआ व्यापक व्यापार
एक से त्रस्त तन है, दूजे कर रहे वार।

(नेमीचन्द भवारी)

सम्मान

जयपुर के मूल निवासी वैद्युत अभियंता तथा मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिक संस्थान जयपुर के पूर्व विद्यार्थी श्री अरूण कुमार बहल को भारत के महामहिम राष्ट्रपति जी के कर कमलों से सेना के सर्वोच्च सम्मान परम विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित व विभूषित किया गया। अभियांत्रिकी सेवा के सर्वोच्च पद पर कार्यरत वाइस एडमिरल अरूण बहल को पूर्व में भी अपनी विशिष्ट सेवाओं के लिए विशिष्ट सेवा मेडल और अति विशिष्ट सेवा मेडल से विभूषित किया जा चुका है। हम सभी अत्यंत गौरव का अनुभव कर रहे हैं। श्री बहल हमारे ही संस्थान के वैद्युत अभियांत्रिकी विभाग में वर्ष १९७४ से १९७९ तक विद्यार्थी रहे थे। आप संस्थान के ऐसे प्रथम अधिकारी हैं जिन्हें सेना के सर्वोच्च सम्मान परम विशिष्ट सेवा मेडल (PVSM) से विभूषित किया गया हो, आपने हमारा संस्थान का और जयपुर का गौरव बढ़ाया है।

राष्ट्र की सेवा के लिए जो असाधारण अद्भूत व जयपुर की तरफ से और सम्पूर्ण राष्ट्र की तरफ से बहुत बहुत बधाई और राष्ट्र सेवा के लिए कोटि कोटि अभिनन्दन।

स्वतंत्रता के नियमों को स्वीकार करने के बाद ही आपको स्वतंत्र कहलाने का अधिकार हैं।

पृष्ठ 2 का शेष भाग....

उजला मन

पति की मृत्यु के बाद उसका बेटा बिरजू उसे ले गया था, अम्मा अब मेरे पास चलकर रहो, उसे सरकारी मकान मिला था और वह एक अरसे से उसमें रह रहा था लेकिन आंनदी कुछ ही दिनों बाद वहाँ से लौट आई थी उससे पूछा गया था कि वहाँ क्या पटी नहीं?

सो बेटा – बहू दोनों बहुत ख्याल रखते थे मैं कुछ काम करती थी तो बेटा रोक देता था, अम्मा आराम करो, मेरे लिए उसने एक अलग कमरे में सामान खिसकवाकर रहने का पक्का इंतजाम कर दिया था कि अम्मा यहाँ तुम शांति से भजन–जाप कर सकती हो, लेट सकती हो, बहू को पता चला कि चटक मिर्च–मसाले से मेरे जलन पड़ती है तो मेरी सब्जी दाल अलग निकालने लगी थी, वह तो मेरा ही मन नहीं लगा यहाँ अपने घर में ताला पड़ा रहे यह मुझे सही नहीं लगता था, बेटे ने कहा, अम्मा तुम मकान किराये पर उठा दो, मैंने कहा मैं किसी गैर को नहीं दूंगी, खुद रहूंगी, आनंदी फिर यह भी जोड़ती थी, मैं रात में सोई तो मुझे सपने में बाबू दिखाई दिए कह रहे थे, बिरजू की माँ तुमने वापस आकर ठीक किया, अपना घर अपना होता है।

बिरजू आनंदी से आकर मिल जाता था, उसका अपना लगभग नियमित सा महीने में पहले रविवार को न आया तो दूसरे रविार को आ जाता था या दफ्तर से जल्द फारिंग हो जाने पर किसी अन्य दिन वह माँ को पचास का नोट पकड़ा देता था, शुरू–शुरू में आनंदी ने मना किया था तेरा अपना भी तो कितना सारा खर्चा है बड़े बाबू के नाम की जो पेंशन मैं पाती हूँ, उससे मेरा काम चल जाता है, जब बेटे ने यह कहा कि अम्मा मैं तुझसे नाराज हो जाऊँगा और आगे नहीं आया करूंगा, तब उसने मना करना छोड़ दिया था।

बेटे बहू और पोती के बारे में पूछती और शिकायत करती कि वह उनको साथ क्यों नहीं लाया, उनको देखे एक मुद्दत हो गई है, बेटे के यह कहने पर कि वे लोग अपने को तैयार तो थे पर ऐन वक्त पर ऐसी जगह से बुलावा आ गया जहाँ मना नहीं किया जा सकता था, वह कहती कि अगली बार उनको बेटा बताता कि वह एक काम से दोपहर का खाना खाकर निकला था और फिर उधर से ही सीधा चला गया कि अम्मा से मिल लें, उससे अगली बार आते ही वह बताता कि शोभा (पत्नी) ने न आ सकने के लिए माफी मांगी है और कहा है कि वह जल्द ही मां जी से मिलने लाएगी, फिर वह थोड़े विस्तार से हाल पूछने लगता, अम्मा, इस बार पेंशन बढ़ी हुई मिली होगी?

बाबू ने बताया कि बीस रूपये की बढ़ोतरी हुई है जो अगले महीने बकाये के साथ लगकर मिल जाएगी, पेंशन देने वाला यह नया बाबू भी बहुत शरीफ है माँ जी, मां जी कहकर बोलता है, पेंशन देते हुए चाय और समोसे के लिए जरूर कहता है मैं पाँच रूपये छोड़ आती हूँ,। गैस के लिए तो परेशान नहीं होना पड़ता? इन दिनों किल्लत चल रही है। वही बदरू रिक्शेवाला सलेण्डर भरवा लाता है, हफ्ता–दस दिन पहले से ही पूछने लगता है, अम्मा सलेण्डर खाली तो नहीं हुआ है, मैंने गोदाम वाले से बोल रखा है। बिरजू की निगाह आंगन की दीवार पर खिंचे बिजली के तार के जोड़ पर चली जाती आंनदी बताने लगती कि दो दिन पहले वहाँ से चिनगारियां निकलने लगी थीं वह मोड़ पर बैठने वाले मिस्त्री को बुला लाई थी, उसने खराब तार निकाल कर नया बदल दिया मजदूरी पूछने पर कहने लगा अम्मा अपने मुंह से कुछ नहीं मागूंगा जो दे दोगी प्रसाद के तौर पर ले लूंगा, तुम तो जानती हो यह खतरे वाला काम है, उसे बीस रूपये दे दिए तो खुश–खुश चला गया भला आदमी है।

मैं आ रहा था तो पीछे गली में दो सिपाही घुस रहे थे, कोई लफड़ा है? पुलिस सोहनलाल दरी वाले के लड़के की तलाश में आई होगी, कहते हैं उसने रेल के डिब्बे से किसी की संदूकची उठाई है, ऐसा हो नहीं सकता वे खानदानी लोग है।

अम्मा, अगर तुझे जज की कुर्सी पर बैठाल दिया जाए तो तू सबको बरी कर दे, फैसले में लिखे यह आदमी शरीफ है, यह आदमी भी शरीफ है, बिरजू हंसने लगता है। आंनदी के चेहरे पर भी हंसी बिथुर जाती जो काढ़े गए ताजे दूध पर उत्तरा आए झाग जैसी कोमल और उजली होती। वोटर लिस्ट की दुरुस्ती के वास्ते सरकारी आदमी आया था दरवाजा खटखटाए जाने पर जब आनंदी निकली तो सरकारी आदमी बोला कि उसकी उम्र तो उसमें सिर्फ चार साल की दर्ज है फिर यह कहते हुए कि यह छापे की भूल है, उसने उसकी उम्र पूछी और जैसा कि हमेशा आनंदी का जवाब होता था, इस बार भी वैसा ही था उन्नीस सौ बीस इससे पहले कि सरकारी आदमी इस पहेली को बूझे–बूझे, जब आनंदी ने फिर जो देकर कहा कि सच में उसकी उम्र उन्नीस सौ बीस है और यह उसके बेटे की बताई हुई है तो सरकारी आदमी खुल गई सोडे की बोतल की तरह हंसने लगा, माँ बाप अपने जायों की उम्र तो जानते है, जानना भी चाहिए अब सुन रहा हूँ कि जाया अपनी माँ की सही सही उम्र जानता है आदमी बुढ़ा कर एकदम बच्चा हो जाता है। तीसरे पहर आनंदी में यह इच्छा तेज–तेज उठी कि चलकर बेटे और बहू को देख आया जाए यों इच्छा की ये लहरे उसमें कई दिनों से उठ रही थी, लेकिनवे टूटकर खामोश हो जाती थीं, आज टूट नहीं रही थीं, बिरजू पिछले माह मिलने आया नहीं था यह महीना भी आधे से ऊपर चढ़ चुका था पिछली बार आने पर बताया था कि बहू को चक्कर आ रहे हैं उसने पूछा कि कोई खुशी की बात तो नहीं है, इस पर बिरजू का स्वर खीज गया था, अम्मा सिडीपन की ये बाते छोड़ दो जानवरों की तरह कुनबा बढ़ाना अब सही नहीं समझा जाता है, पिंकी के इम्तहान अबकरीब है शोभा को उसके साथ मेहनत कुछ ज्यादा करनी पड़ रही है, इसीलिए कभी –कभी ढीली हो जाती है, बातचीत करते हुए बिरजू को भी खांसी आ गई थी आनंदी ने यह कहते हुए कि बादाम में बड़ी ताकत होती है और जिस्म में जब ताकत बनी रहती है तो रोग दूर रहते हैं दूध केसाथ बादाम लिये जाने की उसे राय दी थी।

कल सुबह दीवार पर बैठकर कौवा बोला था, आनंदी को पूरी उम्मदी थी कि बिरजू आएगा कल इतवार भी था, लेकिन बिरजू आया नहीं हां, बगल के घर में सावित्री का भाई बाहर से आया था, उसने तब मान लिया था कि कौवा जो बोला था, वह बगल के घर के लिए ।

आनंदी ने इज्जत आबरू वाले कपड़े पहने घर बंद किया, पड़ोस में खबर की और निकल पड़ी यों बेटा उसी शहर में रहता था, लेकिन अगर वह एक छोर पर थी तो बेटा था दूसरे छोर पर अब सरकार तो अपने आदमीयों को तो उसने हाथ से दरवाजा थपथपा दिया।

उत्कृष्ट कार्य

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर के राजभाषा कार्यावन समिति (हिन्दी प्रकोष्ठ) के तत्वावधान में प्रकाशित हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका मालवीय प्रकाश को उत्कृष्ट सम्पादन हेतु, राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के प्रचार प्रसार हेतु कार्यरत संस्था राजभाषा एकेडमी नई दिल्ली द्वारा 26 से 28 फरवरी 2018 को अर्नाकुलम (केरल) में आयोजित 12वें हिन्दी सम्मेलन एवम् कार्याशाला में पुरूस्कृत किया गया। संस्थान की ओर से यह पुरूस्कार मालवीय प्रकाश की संपादिका डा. ज्योति जोशी ने ग्रहण किया।

क्रोध एवं अहंकार

क्रोध एवं चिन्तनीय विषय है हमें किसी से क्रोधित नहीं होना चाहिए बल्कि उसे क्षमा कर देना ज्यादा बुद्धिमता की बात है क्योंकि क्षमता आपकी भीतर की गहराई को दर्शाता है। ठीक उसी तरह जैसे किसी कुआं की जल की शुद्धता से उसके गहराई का अंदाजा लगाया जा सकता है।

क्रोध एवं अहंकार ये दोनों ही इन्सानियत की छवि को पूरी तरह से फीका कर देते हैं। इन दोनों की उपस्थिति में हम अपने अंदर छिपी हुई अपनी पहचान को खो देते हैं और इस वजह से हमें न जाने कितने तरह के दु:खों का सामना करना पड़ जाता है। समय रहते अगर इन पर नियंत्रण न किया जा सका तो इंसान एवं पशु में शायद ही कोई फर्क रह जाता हो। हमारे बेहतर जीवन के लिए ये दोनों ही किसी तरह से उपयोगी सिद्ध नहीं होते हैं। इनको हर वक्त अपन दुश्मन ही मानना चाहिए। हाँ यह कहना बिल्कुल उचित हो सकता है कि इन दोनों से मिलने वाला एहसास कुछ वक्त के लिए खुशनुमा हो पर इसमें भी कोई दोराह नहीं है कि यह दूसरों को दु:ख देने के पश्चात् ही ऐसा संभव हुआ होगा। वास्तव में देखा जाए यह एहसास अतिशीघ्र मिलने वाले एवं अत्यंत क्षाणिक होते हैं।

ऐसी कहावत है कि दुख दीन्हें दु:ख होते हैं और सुख दीन्हें सुख पाय। मतलब ये की हमारे सारे सुख दु:ख दूसरों के प्रति हमारे द्वारा किए गए व्यवहार पर निर्भर करता है।

जैसा कि हम इस बात को भलीभाँति महसूस करते हैं कि क्रोध से कभी खुशियाँ हासिल नहीं हुई सिवाय दु:ख और चिंता के। ठीक इसी के भाँति अहंकार को समझा जा सकता है। यह किसी एक भार से कम नहीं आंका जा सकता है और जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भार–भार ही होता है, उसे अत्यधिक समय तक उठाकर रखने से सिर्फ दर्द ही हासिल होता हे। यह भार आपको जितना शीघ्र हो सके इसे खुद से दूर निकाल फेकना चाहिये। क्योंकि यह धीरे–धीरे हमारी मनुष्यता को क्षीण कर देता है।

क्रोध एक ऐसी प्रचंड अग्नि की भांति हैअगर इस पर समय रहते नियंत्रण न किया गया तो यह हमारी अच्छाइयाँ

सभी अच्छी विचारधारायें और हमारे द्वारा किये गए सभी अच्छे कर्मों को धीरे–धीरे जला देता है।

भगवान कृष्ण कहते हैं कि क्रोध से मूढता उत्पन्न होती है और मूढ़ता से स्मृति भांति हो जाती है स्मृति भ्रांति होने से बुद्धि का नशा होता है और बुद्धि नष्ट होने पर मनुष्य स्वयं नष्ट हो जाता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि इस से स्वयं को कैसे दूर रखें।

१. जैसा कि हम जानते हैं कि जब कभी भी हमें क्रोध आता हे उस पल हमारा मस्तिष्क काफी उत्तेजित अवस्था में होता है और हमको स्वयं नियंत्रण करता है। जिससे हमारा मन विचलित हो जाता है इस अवस्था में एक ही उपाय है कि हम स्वयं को जीतना अधिक से अधिक हो सके मस्तिष्क को शांत रखे और मन को विचलित होने से बचाएं।

२. क्रोध एक ऐसी स्थिति है जिसमें जीभ मन से अधिक तेजी से काम करती है। उस वक्त अपनी जीभ पर संयम बरतें।

३. जब कभी हम क्रोधित हो उस पल उसे बढ़ावा देने के बजाय हमें उसके परिणाम पर अमल करना चाहिए।

४. हमारा अंहकार माफी मांगने से हमे रोकता हे और रिश्तों को तोड़ देता हे अगर हम इस अहंकार को भूलकर एक कदम भी आगे बढ़ाते हैं तो समझ में आता है कि हमारे बीच रिश्ते आसानी से जुड़ सकते हैं।

५. अहंकार ने जितना मानव जाति का विनाश किया उतना तो भूख, बीमारी और बाढ़ सूखे ने भी नहीं किया। स्वार्थ, संकीर्णता, अनुदारता, लोभ व दूसरों पर आधित्य जैसे दुर्गुणों का कारण है यह अहंकार। ये सभी हमारे अंत:करण में निवासरत हैं। आत्मसमीक्षा व ईश प्रार्थना से इनकी सफ़ाई हो सकती है।

हमारा मन अत्यंत कोमल होता है क्रोध एवं अहंकार को जन्म देकर हमें इसे प्रदूषित नहीं करना चाहिए। यह पूर्णतया हम पर निर्भर करता है।

– अंकुर गुप्ता

एक विचारक से कुछ विद्यार्थियों ने प्रश्न किया – ''प्रतिभा क्या है?'' विचारक ने उत्तर दिया– ''प्रतिभा एक दैवीय स्तर की विद्युत चेतना है, जो मनुष्य के व्यक्तित्व और कृतित्व में असाधारण स्तर की उत्कृष्टता भर देती है। उसी के आधार पर अतिरिक्त सफलताएँ आश्चर्यजनक मात्रा में उपलब्ध की जाती हैं। प्रतिभाशाली अपने लिए असाधारण श्रेय और सम्मान तथा दूसरों को सही मार्ग दर्शन दे पाने में सक्षम हो पाते हैं।''

मेरा मन

कभी इधर तो कभी उधर है,
उड़ती पतंग सा इठलाये ये,
देखे जब भी कुछ मनभावन सा,
उस पर भंवरे सा मंडराये ये
देखे जब भी दूजे को खुश
माचिस सी रगड़ पकड़ जाये थे,
ना हो जब ख्वाहिश पूरी तो,
पता–ए–पतझड़ सा मुरझाए हो,
जो कुछ भी लगे पहुँच से दूर,
बालक सम पीछे लग जाए ये
खूब भले से जाने हैं ये,
कोई और है अब चाहत उसकी ,
फिर भी सिक्के के दो पहलू सी,
कशमकश से उलझाये ये,
अच्छे बुरे को जाने तब भी,
महु छोड़ जूगनू पीछे दौड़ए ये,
हो जाए चाहत पूरी छोटी भी तो,
मयूर नृत्य कर जाए ये,
जब बन जाए नासमझ तो,
ताश के पतो सा बिखरे जाए ये,
जिंदगी को जरूरत बनाना है मुझको,
नयी ख्वाहिश संग सवेरा कराए ये,
ख्वाहिश बादशाहो की भी रही है अधूरी,
कोई कैसे इसको समझाए ये,
जरूरत मुताबिक सुनो इसकी क्योंकि,
पीछे से वार कर ही जाए ये,
मेरे मन को मैं ही ना समझी,
यूँ ही नहीं भीरू कहलाए ये ....

– रक्षन्दा गोस्वामी

कविता

जिदंगी भी कैसे–कैसे पल दिखाती है
आज मिलाकर खुशियों से, अगले ही पल बिछड़ने को बोल जाती है।
अभी तो शुरू ही हुआ था, दोस्ती का किस्सा
बोल गयी इतना ही था जिंदगी में, इन पलों का हिस्सा।
हुए अनुभव और अहसासों की बहत याद आती है,
वो भी हंसकर बोली हर अंधेरी रात के बाद ही खुशहाल सुबह होती है।
मिलना– बिछड़ना तो एक नियम होता है,
मोड़ो का सामना करना राही का ही काम होता है।
जब मिलोगें उन मोड़ों पर फिर,
तब बात यही जिंदगी भी
कैसे–कैसे पल दिखाती है।

– एश्वर्या नांरग

मजदूर

वो कृशकाय, रुग्ण सा
स्वामी के बोझ तले,
झुकी हुई कमर से,
पैरों में हुए आज ही के छालों पर
अपनी भार्या के कहने पर
नारियल का तेल लगा,
मजबूरी की रोटी को पाने की चाहते में
बढ़ता चला जाता है।
उसे नहीं है कोई मतलब
कि राज किसके पास हे
उसे नहीं है कोई मतलब
कि कौन किसका खा है।
उसे बस दाल की महंगाई
और आटे के भाव से पड़ता है फर्क,
क्योंकि अभी तो उसकी बेटी भी जवान हो रही है
और बेटा भी शहर में अच्छी पढ़ाई करने गया है।
अभी उसे मालिक की हर डांट सुननी है।
चाहे धूप हो या छांव,
उसे नहीं है हक शायद
तपन के बारे में कुछ कहने का।

जिज्ञासा

मान लीजिए कि आपकी मोटरकार बिगड़ जाती है और वह नहीं चलती। इसे हर व्यक्ति देखता है, किन्तु मिस्त्री इसे भिन्न रूप से देखता है। वह इसे अधिक जानकारी के साथ देखने के लिए योग्यताप्राप्त है। अतएव वह खोया हुआ पुर्जा लगा देता है और मोटकर कार तुरन्त चल देती है। यद्यपि हमें मोटकरकार देखने के लिए इतनी योग्यता चाहिए किन्तु ईश्वर को हम बिना किसी योग्यता के देखना चाहते हैं। जरा मूर्ख है कि वे अपनी कल्पित योग्यताओं के बल पर ईश्वर को देखना चाहते हैं।

भगवद्गीता में कृष्ण कहते हैं नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृत :- मैं सब के लिए ज्ञेय नहीं। मेरी योगमाया शक्ति मुझे उनकी दृष्टि से छिपाये रहत है। अतः आप ईश्वर को कैसे देख सकते हैं? अतः आप ईश्वर को कैसे देख सकते हैं? किन्तु यह मूढ़ता चलती रहती है- क्या आप मुझे ईश्वर दिखा सकते हैं? क्या आपने ईश्वर को देखा है? ईश्वर तो खिलौना बन गया है, अतएव ठग लोग किसी सामान्य व्यक्ति का विज्ञापन यह कह कर करते हैं यह रहा ईश्वर। यही ईश्वर का अवतार है।

न माँ दृष्कृतिनो मूढ़ाः प्रपद्यन्ते नरधमाः। पापी मूढ़, मूर्ख, अधम व्यक्ति इस तरह पूछते हैं क्या आप मुझे ईश्वर दिखा सकते हें? आपने कौन सी योग्यता प्राप्त कर रखी है जिससे आप ईश्वर को देखना चाहते हैं? योग्यता इस प्रकार है - तच्छ्रद्दधाना मुनयः। सर्वप्रथम मनुष्य को श्रद्धावान होना चाहिए। उसे ईश्वर देखने के लिए अत्यधिक उत्सुक होना चाहिए। ऐसा नहीं कि इसे तुच्छ बात समझी जाय-क्या आप मुझे ईश्वर दिखला सकते हैं? जैसे कोई जादू हो। वे लोग ईश्वर को जादू समझते हैं। नहीं मनुष्य को अत्यन्त गम्भीर होना चाहिए और सोचना चाहिए हाँ मुझे ईश्वर विषयक जानकारी दी जा चुकी है। अतएव यदि ईश्वर है तो मुझे उसका दर्शन करना चाहिए।

जब ध्रुव महाराज ने भगवान् को देखा तो उन्होंने कहा - स्वामिन् कृतार्थोऽस्मि वरं न याचे - हे प्रभु मुझे और कुछ नहीं चाहिए। ध्रुव महाराज भगवान् के पास अपने पिता का राज्य पाने के लिए गए थे, किनतु जब उन्होनें भगवान को देख तो भगवान् ने कहा, अब तुम जो भी वर चाहों माँग सकते हो। ध्रुव ने कहा, हे प्रभु! अब मुझे कोई अच्छा नहीं रही। यही हे भगवान् को देखना।

अतः यदि आप भगवान् को देखने के लिए उत्सुक है, तो आपका मन्तव्य चाहे जो भी हो, अपनी उत्सुकता के कारण किसी न किसी प्रकार आप भगवान् कृष्ण को देखेंगे। यही एकमात्र योग्यता है। अतः आप ईश्वर को देख सकते हैं किंतु आपमें वह योग्यता होनी चाहिए।

- निखिलेश्वर दास

..... पिछले अंक का शेष

योग भगाये रोग

यथा सिंहागजो व्याधो भवेद वश्व शनैः शनैः।
तथैव वश्यते वायु अन्यथा हन्ति साधकम्।।

जिस प्रकार सिंह, हाथी या बाघ को धीरे-धीरे बहुत सावधानी पूर्वक वश में किया जाता है, उसी प्रकार प्राणायाम को धीरे-धीरे करना चाहिये वरना साधक को हानि भी हो सकती है।

योग के पितामह महर्षि पातञ्जलि को हम दोनों हाथ जोड़कर के नमन करते हैं।

योगेन चित्तस्य पदने वाचा मलं शरीरस्य व वैद्यकैन।

यो अपाकरोतम् प्रवरं मुनिनां पतञ्जलि को प्रांजलिरानतोस्मि।।

मैं दोनों हाथ जोड़कर मुनियों में श्रेष्ठ पातञ्जलि को प्रणाम करता हूँ जिन्होंने चित्त की अशुद्धि को योग से, वाणी की अशुद्धि को व्याकरण से और शरीर की अशुद्धि को आयुर्वेद से दूर किया।

मुख्य प्राणायाम निम्न है :

भस्त्रिका :- भस्त्रिका लौहार की धौकनी को कहते हैं। जिस प्रकार लौहार की धौकन कार्य करती है। उसी प्रकार छाती में श्वास को भरना एवं बहार निकालना होता है। श्वास भरने से पहले मूलबंध लगा लेना चाहिये अन्यथा श्वास पेट में जाने का डर रहता है। मूलबंध का अर्थ है कि नाभि से नीचे के हिस्से को ऊपर खींचकर रखना।

प्राणायाम करते वक्त कमर सीधी, चेहरा तनावमुक्त एवं मन प्रफुल्लित होना चाहिये। यह तीन से पाँच मिनट तक करना चाहिये। गर्मी की ऋतु में मिनट से ज्यादा नहीं करना चाहिये। यह अपनी सुविधानुसार सुखासन (आलथी पालथी लगाकर) पद्मानसन, वज्रासन्न, सिद्धासन किसी भी आसन में कर सकते हैं।

इस प्राणायाम से अवसाद, दमा, जुकाम, खाँसी, एलर्जी, पार्किसन, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप में विशेष लाभ होता है। हृदय एवं रक्तचाप रोगी तेज गति से नहीं करें बल्कि धीमी गति से श्वास प्रश्वास की क्रिया करें। प्राणायाम करने से नये व्यक्ति को शुरू में थकान हो सकती है। अतः थकान होने पर विश्राम करें एवं थकान की गति सामान्य होने पर पुनः शुरू करें। शक्ति का अतिक्रमण कतई नहीं करें।

कपाल भांति - कपाल मस्तिष्क के अग्र भाग या मथो ललाट को कहते हैं तथा भाति ओज, कान्ति, आभा को कहते हैं? इस प्राणायाम से चेहरा ओजमय व कान्तिमय हो जाता है। पेट की समस्त व्याधियाँ दूर हो जाती है। इसमें श्वास बाहर निकालते हैं। पूरा ध्यान श्वास बाहर निकालने में लगाते हैं। श्वास बाहर पेट अन्दर, श्वास बाहर पेट अन्दर, इसी क्रिया को दो बार दोहराते रहते हैं। पेट में आकुचन सकुचन की क्रिया करते रहते हैं। इसे तीन से पाँच मिनट तक करना चाहिये। नये व्यक्ति को शुरू में पेट में, आँतों में खिंचवा महसूस हो सकता है, घबराये नहीं, विश्राम करते हुये पुनः धैर्यपूर्वक करना चाहिये। इसमें जुकाम लगने पर जिस प्रकार झटके के साथ नाक साफ करते हैं उसी प्रकार श्वास दोनों नासिकाओं के द्वारा झटके के साथ बाहर निकालते हुये पेट को अन्दर की ओर ले जाना चाहिये। बार-बार पूरा ध्यान बाहर निकालने में लगाना चाहिये। सहज रूप से श्वास अपने आप अन्तर आता रहेगा।

प्राणयाम :- पूरा श्वास छाती में भरें एवं श्वास को बाहर निकालते हुये पेट को पिचका कर कमर के लगा दें। इस तरह पेट के अन्दर पिचकाने की क्रिया को उडयान बंध कहते हैं। नाभि के नीचे के हिस्से को यानि गुदा मार्ग एवं मुतेन्द्रिय को ऊपर की ओर खेंचकर रखें। इसे मूलबंध कहते हैं एवं ठुड्डी को कण्ठकूप से लगा दें, इसे जलन्धरबंध कहते हैं। यह प्राणायाम इस तरह तीन बंधों के साथ लगाकर किया जाता है। इसे कम से कम तीन बार दोहरायें। यर्दन सीधी करके पुनः श्वास भर लें। हृदय रोग एवं उच्च रक्तचाप के रोगी इसे नहीं करें।

अनुलोम - विलोम - बायें हाथ को ज्ञान मुद्रा में (पहली अंगुली एवं अंगुठी के अग्रभाग को मिलाकर) नाभि के पास रखें तथा दायें हाथ का अंगूठा दांयी नासिका के पास एवं दूसरी एवं तीसरी अंगुलियां बांयी नासिका के पास रखें। हथेली का रुख नासिकाओं से थोड़ा उपर की ओर रखें। अब बांयी नासिका से श्वास भरें एवं दांयी से बाहर निकाल दें। दायीं से भरें एवं बायीं से निकाल दें। इसी क्रिया को बार बार दोहराते रहे। इस प्राणायाम से कुण्डलिनी शक्ति का जागरण होता है। प्राणी शक्ति अधोगामी से उर्ध्वगामी (उर्ध्वरेतस) होकर बहने लगती है।

शुरू में नये शक्ति को सिर से भारीपन एवं कानों में सायं -सायं की आवाज महसूस हो सकती है, घबरायें नहीं निरन्तर अभ्यास से कुछ समय में अपने आप ही ये ठीक हो जायेगी। तीन से पाँ च मिनट तक करें।

नाड़ी शोधन - अपनी सुविधा के अनुसार किसी भी आसान में बैठ जायें। अब बायीं नासिका से धीमी गति से (आवाज रहित) श्वास भरें। मूलबंध लगायें, जलन्धर बंध लगायें एवं अपनी शक्ति अनुसार श्वास को रोकर रखें तत्पश्चात् गर्दन सीधी करके दांयी नासिका से सूक्ष्म गति से श्वास बाहर निकाल दें। पुनः जिस नासिका से श्वास बाहर निकाला यानि दायीं नासिका से सूक्ष्म गति से श्वास भरें, मूलबंध, जलन्धर बंध लगायें, अपनी शक्ति अनुसार श्वास को रोकें एवं बायीं नासिका से सूक्ष्म गति से बाहर निकाल दें। इस प्रकार यह दोनों नासिकाओं की एक आवृत्ति हुई। इस तरह तीन आवृति करें। इससे मन शांत हो जाता है, एकाग्रता बढ़ती है, शरीर तनाव रहित हो जाता है।

भ्रामरी :- जिस प्रकार भौरां गुंजन क्रिया करता है, उसी प्रकार इस प्राणायाम से गुंजन करते हुये करते हैं। दोनों हाथें के अंगूठों को कान में लगाकर कान बंद करते हैं एवं पहली अंगुली माथे पर बाकी तीन अंगुलियों को आपस में मिलाकर आँखों के पास हलके दबाव के साथ रखते हैं। दोनों नासिकाओं से पूरा श्वास भरते हैं एवं मुंह बंद रखते हुये रखते हुये गुंजन क्रिया करते हैं। इससे पूरा मस्तिष्क झंकारित हो जाता है। असीम शांति एवं सुख की अनुभव होता है कम से कम पाँच बार एवं अधिकतम इक्कीस बार कर सकते हैं। सुखद नींद के लिये रात को सोते समय अवश्य करें।

इस प्राणायाम से तनाव, अनद्रा दूर होती है।

उद्गीथ प्राणायाम - यानि ॐ का नाद। दोनों नासिकाओं से पूरा श्वास भरें एवं आँखें बंद रखते हुये ॐ की ध्वनि के साथ बाहर निकालें। कम से कम पाँच बार करें।

विशेषः-सभी प्राणायामों में श्वास रोकने की क्रिया उच्च रक्तचाप एवं हृदय रोगी नहीं करें। प्राणायाम करते समय विचार करें कि परमात्मा की आप पर असीम कृपा है। परमात्मा अपन पर अमृत की वर्षा कर रहे हैं और आप उसका पान कर रहे हैं। पूरा वातावरण आनंदित एवं उल्लासमय है। अपना ध्यान आज्ञाचक्र में केन्द्रित करते हुये (आज्ञाचक्र - जहाँ तिलक लगाते हैं) महसूस करें कि आप के चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश फैला हुआ है। आप प्रत्येक श्वास के साथ प्रकाश ग्रहण कर रहे हैं एवं प्रत्येक प्रश्वास के साथ अन्धकार विजातीय तत्व बाहर निकाल रहे हैं।

- वैद्य डॉ. भास्कर शर्मा (एमएनआईटी)

मदन मोहन मालवीय

मैं भी उस यात्रा में पण्डित मदन मोहन मालवीय के साथ था। सन्धया होते ही मालवीय जी सन्धयोपासन करने लगे। मेरा नमाज का समय हो गया था। किन्तु पण्डित मदन मोहन मालवीय के महान व्यक्तित्व के सामने मेरा साहस नमाज पढ़ने का नहीं हुआ।'' पण्डित मदन मोहन मालवीय ने इशारे से मुझे बुलाकर कहा, ''तुम कैसे मौलाना हो जो नमाज नहीं पढ़ते। शाम की नमाज़ कज़ा करोगे क्या?'' मालवीय जी ने गम्भीर वाणी में कहा, ''उठो नमाज पढ़ो, समय हो गया है''।

मैंने उनके सामने नमाज़ पढ़ी। पूजा से उठने के बाद उन्होंने प्यार से मरी पीठ ठोकी और कहा - ''मैं कब कहता हूँ कि मुसलमान अपने मज़हब का पालन नहीं करें।'' इसके विपरीत मैं तो हिन्दू और मुसलमान दोनों से कहता हूँ कि अपने-अपने मजहब और धर्म पर दृढ़ हो तभी सबकी मित्रता सच्ची और पक्की होगी। पण्डित मदन मोहन मालवीय ने अपने प्रयास से काशी विश्वविद्यालय के पास नहिदा ग्राम में मस्जिद भी बनवायी थी। इन अनेक उदाहरणों एव उद्धारणों से स्पष्ट हो जाता है कि उनकी धार्मिक भावना समष्टिवादी समन्वयवादी थी।

पण्डित मदन मोहन मालवीय चाहते थे कि प्रत्येक हिन्दू पक्का हिन्दू और प्रत्येक मुसलमान पक्का मुसलमान बने। उनका आग्रह था कि सभी धर्मावलम्बियों का मुख्य धर्म देशभक्ति होना चाहिए। देश की उन्नति को ही हम अपनी उन्नति समझें, देश के यश को अपना यश, देश के जीवन को अपना जीवन और देश की मृत्यु को अपनी मृत्यु समझें।

पण्डित मदन मोहन मालवीय ने ''अभ्युदय'' में अपने एक लेख में कहा था, ''यह देश केवल हिन्दुओं का नहीं है। हिन्दुस्तान जैसा हिन्दुओं का प्यारा जन्म स्थान है, वैसा ही मुसलमानों का भी है। ये दोनों जातियाँ अब यहाँ बसती हैं और सदा बसी रहेंगी। जितनी इन दोनों में परस्पर मेल और एकता बढ़ेगी उतनी ही देश की उन्नति करने में हमारी शक्ति बढ़ेगी। इनमें जितना ही बैर या विरोध या अनेकता रहेगी, उतना ही हम दुर्बल रहेंगे।

सार्वजनिक जीवन में महामना के हृदय में हिन्दू, मुसलमान, अंग्रेज एवं ईसाई का कोई भेदभाव नहीं था। आप ''सर्वभूतहितेरता'' सिद्धान्त के अनुसार प्राणीमात्र का कल्याण चाहते थे।

हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक होते हुए भी मालवीय जी हिन्दू शक्ति संगठन के प्रणेता थे। उनकी मान्यता थी कि हिन्दुओं की तथाकथित दुर्बलता एवं अनैक्य का लाभ दूसरे सम्प्रदाय के गुण्डा तत्व उठाते थे।

शेष अगले अंक में

(ज्योति जोशी)

उत्तम स्वभाव

उत्तमानां स्वभावोऽयं परदुःखासहिष्णुता।
स्वयं दुःखं च सम्प्राप्तं मन्यतेऽन्यस्य वार्यते।।
दयालुश्यदस्पर्श उपकारी जितेन्द्रियः।
एतेश्च पुण्यस्तम्भैस्तु चतुर्भिद्यर्यिते मही।।

अर्थात् उनका स्वभाव उत्तम माना जाता है, जो सहिष्णु होते हैं और स्वयं कष्ट लेकर दूसरे का दुःख दूर करते हैं। दयालुता, अभिमानशून्यता, परोपकारिता और जितेंद्रिय होना- ये वे चार स्तंभ हैं, जिनके आधार पर धरती टिकी हुई है।

जीवन मूल्य

तुर्की और ईरान के मध्य युद्ध हुआ। युद्ध में तुर्की की सेना ने ईरान के सूफी संत फरीदुद्दीन को पकड़ लिया और उन्हें कारावास में डाल दिया। इस समाचार को सुनकर ईरान की जनता दुःखी हो गई और अपना क्षोभ व्यक्त करने जनसमूह ईरान के शाह से मिलने पहुँचा। उनकी फरियाद सुनकर ईरान के शाह ने तुर्की के सुल्तान को प्रस्ताव भेजा कि वे हमार सारा राज्य ले लें, पर संत को छोड़ दें।

तुर्की का सुल्तान यह प्रस्ताव सुनकर घोर आश्चर्य में पड़ गया और उसने दूत के माध्यम से प्रश्न कराया कि जिस राज्य को हम लड़कर युद्ध में न जीत सके, उसे वे एक आदमी के बदले क्यों देने को तैयार हैं? ईरान के शाह ने कहा- ''राज्य आते-जाते रहते हैं, पर संत अमर हैं। संत को खोकर मिला राज्य मूल्यहीन है, पर संत बहुमूल्य हैं।'' यह सुनकर तुर्की के सुल्तान की आँखें खुल गईं। वह जान गया कि जिस देश में संतों का इतना आदर है, उसे जीत पाना संभव नहीं। उसने संत को आदरपूर्वक छोड़कर ईरान से संधि कर ली।

जो सदा संतुष्ट है, वही सदा हर्षित एवं आकर्षणमूर्त है।

प्रकाशक एवं **सम्पादक डॉ. ज्योति जोशी**, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 9413971604, ई-मेल : malaviyaprakash.lokmat@gmail.com
सदस्य, सम्पादक मंडल : अशोक अग्रवाल एवं अंशु सक्सैना
लेजर टाईप सैटिंग एवं मुद्रण स्थल : द् प्रिण्ट पैलेस, कैलगिरी रोड, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 0141-4002016 • www.theprintpalace.com